



भोज, भोजपुर आ भोजपुरी : प्राचीनतम दस्तावेजीकरण

डॉ. गोपाल ठाकुर

अध्यक्ष, भाषा आयोग

gthakurvk@gmail.com

(प्राप्त मिति: २०८१/०९/०७; स्वीकृत मिति: २०८१/१२/०१)

लेखसार

अब तक के वर्गीकरण के अनुसार भोजपुरी हिंदोपीय भाषा परिवार के नव हिंद-आर्य उपपरिवार में पूर्वी शाखा में सब से पच्छिमी भाषा ह। ई मूल रूप से नेपाल के मधेश, बागमती, गंडकी आ लुंबिनी प्रदेश के सर्लाही से रूपंदेही जिला तक बोलल जाला त एकरे सीमावर्ती भारतीय प्रांत बिहार के पच्छिमी आ उत्तर प्रदेश के पूर्वी हिस्सा का साथे मध्य प्रदेश के उत्तरी हिस्सा में भी बोलल जाला। इहाँ भोज के पुर भोजपुर आ ओह में -ई प्रत्यय लागके भोजपुरी भइल तथ्य पर अब तक समग्र भोजपुरिअन के साथ साथ स्वदेशी-विदेशी भाषावैज्ञानिक लोग के बीच भी मतैक्य बा। यानी भोजपुरी आपन नाम भोजपुर से लेले बा एह बात पर मतैक्य बा। त ई केतना प्राचीन बा, एकर एही नाम से प्रयोग कब से होत आ रहल बा, ई जानल जरूरी बा। त एह आलेख में इहे भोज, भोजपुर आ भोजपुरी के प्राचीनतम दस्तावेजीकरण के खोजमूलक ढड से परोसल गइल बा।

शब्दकुंजी : भोज, भोजपुर, भोजपुरी, ऋग्वेद, मुताखरीन।

१. परिचय

आजकाल लोग अपना अपना पहचान के प्राचीनता के खोजी कर रहल बा। बाँकिर एह क्रम में ऐतिहासिकता से बेसी लोग पौराणिकता के आत्मरती में आनंद के अनुभव करेलन, जबकि पौराणिकता के कौनो जर-पेखना ना होखे। जेकरा जे डवे मन कइलख ओही डवे लिख देलख। एकर सब से प्रस्ट दृष्टांत बा, कौनो एगो पुराण दोसरा पुराण के आख्यान के स्वीकार ना करे। हरेक पुराण कौनो निश्चित देवी भा देवता का नाँव लिखाइल बा। कहे के मतलब जौन देवी भा देवता के नाँव से पुराण बा, ऊ महान, सर्वोच्च, परमसत्य आदि जे जइसन विशेषण से सुशोभित करेके बा, कइल गइल बा, बाँकिर आउर देवी-देवतन से उपर। एकरा बावजूद हमनी के जिए-मरेके बा ऐतिहासिकता में, ओहीसुके आपन पहचान भी ऐतिहासिकता में ढूँढके वैज्ञानिक तथ्य का साथ सार्वजनिक कइल सर्वोत्तम विधि मानल जाएके चाहीं। निश्चित रूप से भोजपुरी के अब तक नव हिंद-आर्य भाषा के रूप में मानल जा रहल बा। आर्य जाति का बारे में भी दूगो मत बा: पहिलका कि ऊ लोग पच्छिम से अफगानिस्तान होत दक्खिन एसिया में प्रवेश कइलन, त दोसरका कि आर्य लोग दक्खिन

खण्ड एक: ऐतिहासिक भाषाविज्ञान (भोजपुरी)

एसिआ के मूल बसीना रहलें, बाहर से नइखन आइल। ई परस्पर विरोधी मत के बीच में मतैक्य ई बा कि हिंद-आर्य भाषा दक्खिन एसिआ में पच्छिम से बनल सुरु भइल आ पुरुब ओरी पसरत गइल। अतः हिंद-आर्य परिवार के पच्छिम के भाषा से पुरुब के भाषा विभिन्न कारण से विकसित भा समृद्ध हो सकेला बाँकिर पुरान ना हो सके। बाँकिर भोजपुरी से पुरुब के ओर रहल कुछ भाषाभाषी लोग अपना के ढेर प्राचीन त बतावते बा, ओह में से कुछ लोग अपना के मूल निवासिओ मानत बा आ ओह भूमि पर बसल आउर लोग के प्रवासी कहके तुच्छता प्रदर्शन कर रहल बा। मूल निवासी आ प्रवासी का बारे में त समाजशास्त्र आ मानवशास्त्र अध्ययन करेला, बाँकिर भाषा के उद्गम, उद्भव आ विस्तार का बारे में बात उठला पर ऐतिहासिक तथ्य आ ऐतिहासिक भाषावैज्ञानिक कसौटी पर भाषाविज्ञान के अध्येता लोग भी सत्य-तथ्य सामने राख सकेलन।

एह संदर्भ में नीचा देहल जिज्ञासा सब के सत्यापन कइल जरूरी बा:

(क) भोजपुरी के नाम का बारे में रहल कहनाम कथी बा?

(ख) एकर प्राचीनतम स्वरूप कब से कइसन देखल जा रहल बा?

(ग) कौन-कौन दस्तावेजन में भोज, भोजपुर आ भोजपुरी के उल्लेख मिलेला?

अतः एह अध्ययन के खास उद्देश्य नीचा उल्लेख बा:

(क) भोजपुरी के नाम का बारे में स्पष्ट कइल,

(ख) एकर प्राचीनतम स्वरूप पर अति संक्षेप में चर्चा कइल, आ

(ग) प्राचीनतम दस्तावेदन में भोज, भोजपुर आ भोजपुरी के उल्लेखित संदर्भ पर चर्चा कइल।

२. परिचय आ सत्यापन के तरिका

ई शोधात्मक अध्ययन के चरित्र मूलतः गुणात्मक बा। ओहीसुके ऐतिहासिक रूप से प्रामाणिक रहल अब तक के प्राचीनतम शिलालेख आ प्रकाशित ग्रंथ सहित के दस्तावेजन में देखल गइल भोजपुरी के प्रायोगिक स्वरूप, संरचना आ भोज, भोजपुर आ भोजपुरी नाम के प्रयोग के संदर्भ के संकलन कके यथोचित जगह पर प्रस्तुत कके एह आलेख में ई देखावल गइल बा कि भोजपुरी केतना प्राचीन आ केतना अर्वाचीन भाषा बा।

एही सीमा के भीतर रहके भोज, भोजपुर आ भोजपुरी के प्राचीनतम दस्तावेजीकरण के प्रामाणिक हिसाब से एह आलेख में परोसल गइल बा।

३. भोजपुरी के नामकरण

बीम्स (१८६८), ग्रिअर्सन (१८८३ आ १९०३), तिवारी (१९५४, १९६० आ १९८४) आ त्रिपाठी (१९८७) सहित अब तक के विद्वान लोग के मतैक्य बा कि वर्तमान भारत के बिहार प्रांत के भोजपुर जिला में रहल भोजपुर नगर जहाँ भोजवंशी राजा लोग के राजधानी रहे, ओही नाम पर एगो विशाल भाषा के नाम भोजपुरी पड़ल। ओइसे त एह में से केहू एकर साल-संवत नइखीं लिखले बाँकिर बीम्स, ग्रिअर्सन आ तिवारी के विवरण एह घटना के इतिहास के मध्यकाल में घटित भइल संकेत करेला जे में मालवा के भोजवंशी 'उज्जैनी' राजपूत लोग ओतहाँ के 'चेरो' जाति के शासक लोग के पराजित कके १०वाँ शताब्दी में आपन शासन स्थापना कइले रहलन। अतः भोजवंशी राजा लोग के पुर 'बासस्थान' के रूप

खण्ड एक: ऐतिहासिक भाषाविज्ञान (भोजपुरी)

में रहल गाँव भा नगर के नाँव भोजपुर आ ओह में -ई प्रत्यय लागके भोजपुरी आ -इआ प्रत्यय लागके भोजपुरिआ भइल विषय पर मतैक्य जरूर बा। भोजपुरी आ भोजपुरिआ दून शब्दन के प्रयोग भाषा के रूप में होला, बाँकिर भोजपुरिआ से भाषा के प्रतिनिधित्व भइल कम आ भोजपुर के निवासी भा भोजपुरी बोलेवाला लोग के प्रतिनिधित्व भइल अधिक देखल जाला। कुछ लोग के कहनाम अनुसार भोजपुरिआ शब्द के प्रयोग निरादरार्थी के रूप में होला बाँकिर ई पूरा साँच नइखे। कोलकाता से कोलकतिआ, जनकपुर से जनकपुरिआ अगर निरादरार्थी नइखे त अपना के भोजपुरिआ कहल भा सुनल निरादरार्थी मानल जरूरी नइखे।

४. भोजपुरी के प्राचीनतम स्वरूप के प्राप्ति

भोजपुरी के नामकरण का बारे में विभिन्न विद्वानन के मतानुसार १०वीं ईसवी शताब्दी में भोजपुर के बसल-बसावल आ ओतहाँ के भाषा भोजपुरी आ निवासी चाहे भोजपुरी बोलेवाला भोजपुरिआ भइल बात तर्कसंगत त लागेला बाँकिर भोजपुरी के भाषिक स्वरूप एह से बहुते पुरान बा। ठाकुर आ अशक (२०२३) में एह विषय के बड़ा बारिकी से परोसल लउकेला। ओह अनुसार हिंद-आर्य के आदिम स्वरूप आगा बढ़त शास्त्रीय रूप में वैदिक भा छांदस से संस्कृत तक पहुँचके रूढ़ हो गइल आ जनबोली के हैसियत गवाँ चुकल। बाँकिर ओकर लौकिक स्वरूप क्रमशः प्राकृत, पालि, प्राकृत, अपभ्रंश आ अवहट्ट के खेंढी से अवतरण होत आज के दर्जनो भाषा के रूप में विकसित आ विस्तारित भइल बा जौना में भोजपुरिओ पड़ेला। बाँकिर भोजपुरिआन का लगे एकेगो लुर ना रहल, जे ह मिथ्याकरण के कृत्रिम सत्यापन। यानी भोजपुरिआ लोग झूठ बात के साँच बनावे खातिर घोसे के त सिखबे ना कइलन, अपनो बुनियादी धरोहर के बँचावे में पाछा पड़ गइलन।

ई प्रमुख कारण रहल कि एक से एक भोजपुरिआ विद्वान लोग के नजर में भोजपुरिए साहित्यविहीन लउकल, ललितकला से शून्य लउकल, संगीत-नाट्य में चहकला का बादो बड़ा फुहर लउकल। ना त ठाकुर आ अशक (२०२३) से पहिलहू एकर आदिम धरोहर के खोज हो सकत रहे। बाँकिर भले देरे से सही, भोजपुरी दुरुस्त होके जरूर आइल। अतः एकर आदिम धरोहर ठाकुर आ अशक (२०२३) में अपभ्रंशकाल में सिद्ध आ नाथ संप्रदाय के संत लोग के भक्ति रचनन में, बारहवीं ईसवी शताब्दी में रचित पं. दामोदर के उक्ति-व्यक्ति-प्रकरण (मुनि, १९५३) में, कविशेखराचार्य पं. ज्योतिरीश्वर ठाकुर के वर्ण-रत्नाकर (चटर्जी आ मिश्र, १९४०) में आ विद्यापति के कृतिलता, कृतिगाथा आ कृतिपताका सहित के अवहट्ट कृतिअन आ उनकर पदावली आ लोकजुबान पर रहल उनकर आउर गीतन में बड़ा बारिकी से खोजके परोसल गइल बा। भोजपुरी भाषा एह नाम से आपन परिचय कब आ केतना ख्याति के साथ पौलस, ई खोज के विषय हो सकेला, बाँकिर एकर कार्यात्मक संरचना बहुते पुरान बा। संरचना के बात अगर कइल जाए त प्रा. डॉ. राजेंद्र प्रसाद सिंह एकर सुरुआत पूर्व वैदिक काल में ही हो चुकल बतावेनी। प्रथम प्राकृत काल में सुरुआती ब्रामी लिपि में सोहगौरा ताम्रपत्र में जे तथ्य मिलल बा, ऊ भोजपुरी के संरचना पूर्व वैदिक काल के रहल संकेत करेला। होय (१८९५, पृ. ८४-८५) के अनुसार सोहगौरा ताम्रपत्र एगो जिज्ञासापूर्ण संक्षिप्त अभिलेख बा जे में भोजपुरी के व्याकरणिक कोटिअन के दर्शन

खण्ड एक: ऐतिहासिक भाषाविज्ञान (भोजपुरी)

होला। सोहगौरा भारत के उत्तर प्रदेश के गोरखपुर से १४ माइल दक्खिन-पुरुब दिशा में अवस्थित बा। होय ओह समय में गोरखपुर जिलाधीश भइला का नाते एह ताम्रपत्र के बंगाल के एसिआटिक सोसायटी के सौंप देले रहलन। सोसायटी का ओर से स्मिथ (१८९५, पृ. ८५-८७) के अनुसार $२\frac{५}{८}'' \times १\frac{५}{८}'' \times \frac{१}{८}''$ घनाकार में ई ताम्रपत्र मौजूद बा। स्मिथ एह ताम्रपत्र के एकर एक-तिहाई भाग में कुछ बौद्धमार्गी संकेत बतावेलन त बाँकी दू-तिहाई में चार पाँती में सुरुआती ब्रामी लिपि में तत्कालीन



सामंती राज्य का ओर से निर्देश जारी भइल बतावेलन। एह चार पाँतिअन में पहिलका दू पाँती में १९-१९ आ अंतिम दू पाँती में १७-१७ अक्षर में कुछ निर्देश जारी कइल गइल बा। स्मिथ सबसे पहिले एकर देवनागरी रूपांतरण कइलन। ओह रूपांतरण में कुछ सुधार के साथ फेर से हॉन्ले (१८९५, पृ. ८७-८८) में एकर देवनागरी रूप प्रस्तुत मिलेला। उनका बाद बुलर (१८९६, पृ. २६१-२६६) में विभिन्न कोण से तर्क-वितर्क के साथ ओकर देवनागरी रूपांतरण प्रस्तावित कइले बाड़न जे बेसी तर्कपूर्ण भइला का चलते बरुआ (१९३०, पृ. ४७) में प्रस्तुत बा:

- (१) क. सावतियन महमतन ससने मनवसितिक-
 ख. डसिलिमते वसगमे व एते दुवेकोठगलनि-
 ग. तिघवनि मथु-लच-चमोदंम-भलकनछ-
 घ. ल कयियति अतियायिकय नो गहितवय

दृष्टांत (१क-घ) में प्राकृत भाषा में प्रस्तुत निर्देश के संस्कृत रूप ओकरा नीचे कुछ अइसन देहल गइल बा:

- (२) क. सावतियान महाम(ता)न सासने मानवसितिकडा
 ख. सिलिमते वांसगामे व एते दुवे
 ग. कोठागलानि तिघवनि मथु-लाचा-चमोदांमभालकान
 घ. कलं कयियति अतियायिकाय नो गहितावयं

"श्रावस्ति के महामात्यन के शासन में मानवसितिकट में रहल शिविर से जारी आदेश; 'ई दूगो तीनमंजिला बेरी जे मसहुर वंशग्राम में भी अवस्थित बा, लतरल दूभ से तोपाइल ओह में भरल भुँजल अनाज, अत्यावश्यक परिस्थिति खातिर बा। एह में से केहू कुछिओ ना निकालो।'"

दृष्टांत (१क-घ) में प्राकृत में अंकित राज्यादेश के दृष्टांत (२क-घ) में प्रस्तुत संस्कृत अनुवाद आ ओकर भोजपुरी में प्रस्तुत स्वतंत्र अनुवाद के देखला पर दूगो शब्द 'महमतन' 'महामात्यन' भा 'महाधिकारिअन' में भोजपुरी के बहुवचन -अन प्रत्यय आ 'ससने' 'शासन में' में

खण्ड एक: ऐतिहासिक भाषाविज्ञान (भोजपुरी)

-ए अधिकरण प्रत्यय प्राकृत से संस्कृत तक ओइसने लउकता। अतः प्राकृत से वैदिक होत संस्कृत में गइल बा, ना कि भोजपुरी संस्कृत से उधार लेले बा। दोसर खासिअत ई बा कि एह में श के प्रयोग नइखे जे प्राकृत काल से अब तक भोजपुरी के खास चरित्र रहल बा।

५. भोज, भोजपुर आ भोजपुरी शब्दन के प्राचीनतम प्रयोग

निश्चित रूप से काल गणना ना लिखला के बावजूद बीम्स, ग्रीअर्सन आ तिवारी के विवरण एह घटना के इतिहास के मध्यकाल में घटित भइल संकेत करेला जे में मालवा के भोजवंशी उज्जैनी राजपूत लोग ओतहाँ के चरो जाति के शासक लोग के पराजित कके १०वाँ शताब्दी में आपन शासन स्थापना कइले रहलन। बाँकिर त्रिपाठी (१९८७, पृ. २४) के संकेत इतिहास के प्राचीन कालखंड का ओर ले जाला:

(३) इमे भोजा अङ्गिरसो विरूपा दिवस्पुत्रासो असुरस्य वीराः।

विश्वामित्राय ददतो मघानि सहस्रसावे प्र तिरन्त आयुः॥

हे इंद्र! यज्ञ करेवाला ई सुदासवंशी भोज नामक क्षत्रिय, उनकर याजक अनेक अंगिरागोत्रीय ऋषि आ देवजन से बलवान रुद्र के पुत्र मरुत एह अश्वमेध यज्ञ में गुरु विश्वामित्र के महान धन देत हमरा धन के बढ़ावस।' (ऋग्वेद, मंडल ३, सुक्त ५३, श्लोक ७)

त्रिपाठी के अनुसार भोज लोग विश्वामित्र के जजिमान रहलन जेकरा के ऊ इमे भोजा कहके सरहले बाड़न। एहीतरे ऋग्वेद में आउरो जगे भोज शब्द के प्रयोग भइल लउकेला:

(४) स सक्षणो दिव्यः कण्वहोता त्रितो दिवः सजोषा वातो अग्निः।

पूषा भगः प्रभृथे विश्वभोजा आर्जिं न जगमुराश्वतमाः॥

'यज्ञ के स्वीकार करेवाला, मेधाविअन द्वारा बोलावल गइल, तीन ठाँव में उत्पन्न होके भी सुरुज के समान प्रसन्नता देवेवाला आ विश्वरक्षक वायु, अग्नि आ पूषा देव हमनी के यज्ञ में आशुगामी अश्व के समान जल्दी आवस।' (ऋग्वेद, मंडल ५, सुक्त ४१, मंत्र ४)

दृष्टांत (३-४) के देखला पर दृष्टांत (३) में भोज शब्द के प्रयोग सुदासवंशी भोजनदाता राजा के रूप में बा त दृष्टांत (४) में विश्वरक्षक के रूप में। अतः एह शब्द के प्रयोग मूलभूत रूप में दूनू मंत्रन के संदर्भ से मिलत-जुलत लउकेला 'भोजनदाता' का रूप में यानी 'यजमान' भा 'जजिमान' भा 'रक्षक' का रूप में। वैदिक काल में भोजनदाता चाहे जजिमान चाहे रक्षक मूलतः राजा लोग ही होत रहे। अतः भोजवंशी लोग के राज वैदिक काल में रहे, ऋग्वेद बतावेला, आ जहाँ तक विश्वामित्र के जजिमान के बात बा त ऊ निश्चित रूप से आज के भोजपुरिए क्षेत्र में रहल बक्सर के संकेत करेला। त्रिपाठी का अनुसार ओह बेरा भोज लोग कारुष का बाहर दूर-दूर तक फइलल रहे। अर्थात् भोज के पुर भोजपुर आ ओह में -ई प्रत्यय लागके बनल भोजपुरी कौनो ना कौनो रूप में प्राचीन काल से विकसित होत आ रहल बा।

भाषा के रूप में भोजपुरी नाम के प्राप्ति मध्यकाल में सब से पहिले सन १७८१ में भइल उल्लेख मिलला। एही साल के अगस्त के बीच में इस्ट इंडिया कंपनी के गभर्नर जेनरल वारेन हेस्टिङ्स आ बनारस रिआसत के महाराजा चेत सिंह के बीच में लड़ाई छिड़

खण्ड एक: ऐतिहासिक भाषाविज्ञान (भोजपुरी)

गइल। एह विषय में मिलल जानकारी (http://hi.wikipedia.org/wiki/चेत_सिंह) अनुसार १६ अगस्त १७८१ में भइल लड़ाई में चेत सिंह से वारेन हेस्टिङ्स के हारके भागेके पड़ल। एह प्रसङ पर भारत में एगो कहाउत बहुते लोकप्रिय रहल बा:

(५) घोड़ा पर हौदा हाथी पर जीन।

मुँह नुकाके भागल वारेन हेस्टिङ्ग ॥

ई बहुत सटीक कहाउत बा आ व्यंग्यात्मको ओतने। काहेकि हौदा हाथी पर कसाला आ जीन घोड़ा पर बनाला। बाँकिर वारेन हेस्टिङ्स एह लड़ाई में अइसन हबकुनिए गिरलें कि घोड़ा पर जीन आ हाथी पर हौदा तक के उनका ठेकान ना रहल। महिला के भेष में साड़ी के घोघ तानके चेत सिंह से गदारी करेवाला कुछ भारतीय लोग के कारण ऊ भागे में सफल भइलन।

बाँकिर, फिरडी सरदार मानित कइसे! ऊ फेर से २८ अगस्त १७८१ के दिन चेत सिंह पर दोबारा हमला कइलें। एह मोकाबला में कमजोर पड़ला पर चेत सिंह के पलायन करेके पड़ल। एह घटना के मोतीचंद्र (१९६२, पृ. २६६-२८८) में बड़ा रोचक आ आधिकारिक ढङ से व्याख्या-विक्षेपण कइल गइल बा। एही घटना के दू दिन बाद अडरेज के बंदी रहल उनकर कुछ सिपाही लोग फिरडिअन का साथे चुनारगढ़ जात रहे। ऊ एह से कि वारेन हेस्टिङ्स के सुरक्षित कोठी ओह बेरा ओतहें रहे। एह क्रम में रास्ता में भइल एगो वारदात में *भोजपुरिआ जुवान* (*Bodjpooria Idiom*) 'भोजपुरी भाषा' के प्रयोग भइल मानुस (१७८५, पृ. ८) में उल्लेख मिलेला। एह संदर्भ के भोजपुरिअन के मुहजोर प्रवृत्ति के रूप में ग्रिअर्सन (१९२७, पृ. २४) में आ तिवारी (१९८४, पृ. २३४-२३५) में भी उल्लेख मिलेला। बाँकिर ग्रिअर्सन आ तिवारी के अनुसार साल १७८९ ई. बतावल गइल बा जौन कि एह वृत्तांतवाला किताब *शेर मुताखरिन* के १७८५ के बादवाला कौनो प्रकाशन के साल हो सकेला, ना कि ओह वारदात के। ना त १७८९ के घटना के एह किताब के अनुवादक नोता मानुस १७८५ में कइसे उल्लेख करते? अतः दस्तावेजीकरण भइल ई पहिल घटना १७८१ के ह, १७८९ के ना ह:

(६) दू दिन बाद, सिपाहिअन के एगो रेजिमेंट जब किरिन फुटला पर सहर से होत चुनारगढ़ के ओर जात रहे, तब हम गइनी आ ओह के जात देखे खातिर खड़ा हो गइनी। एतने में रेजिमेंट के सिपाही सब रुकल आ ओह लोग के बीच से कुछ लोग अनार गली के ओर दउर पड़ल। ऊ लोग एगो मुर्गी पकड़ लेहलक आ कुछ मुरई-गजरा भी उठा ले आइल। लोग चिल्लाए लागल। तब एगो सिपाही आपन *भोजपुरिआ जुवान*^१ में कहलस, एतना हल्ला मत कर। आज हमनी फिरडिअन का साथे जा रहल बानी; बाँकिर हमनी सभेकेहु चेतसिंह के प्रजा हई आ बिहान उनहुँ का साथे आ सकतानी। तब मुरई-गजरा के सवाल ना होई; बल्कि सवाल होई तोहनी के माउ-बेटिअन के।^२

१. *भोजपुरिआ जुवान* ऊ ह जे चेत-सिंह के प्रजा द्वारा बोलल जाला -अनुवादक।

२. Two days after, as a Regiment of Sepoys on its way to Chunar-ghur, was marching through the City at day-break, I went out, and was standing to see it pass by, the Regiment halted;

खण्ड एक: ऐतिहासिक भाषाविज्ञान (भोजपुरी)

नोता मानुस के एह फेहरिस्त के देखला के बाद १८वाँ ईसवी शताब्दी में भी भोजपुर से काशी तक के भाषा आउर कुछ ना होके भोजपुरी रहे, ई तथ्य उजागर होला।

६. उपसंहार

एह गुणात्मक शोधमूलक आलेख में भोजपुरी के कार्यात्मक-संरचनात्मक व्याकरणिक कोटिअन के प्रयोग से लेके भोज, भोजपुर आ भोजपुरी शब्दन के प्राचीनतम प्रयोग के राजकाज, साहित्य आ ऐतिहासिक दस्तावेजन के आधार पर परोसे के कोसिस कइल गइल। कार्यात्मक-संरचनात्मक व्याकरणिक कोटिअन के प्रयोग सुरुआती ब्रामी लिपि के प्रयोग करत प्राकृत में अंकित सोहगौरा ताम्रपत्र के अभिलेख में प्रामाणिक रूप से मिलल बा। ऊ पूर्व वैदिक काल के अनुमान कइल जा सकेला। अतः वैदिक भा छांदस आ ओकरा बाद बनल संस्कृत सभी नव हिंद-आर्य भषन के उद्गम ह कहेवाला अवधारणा इहाँ खंडित होला आ ई तथ्य प्रमाणित होला कि प्रथम प्राकृत लोक भाषा से वेद के ऋचा भा मंत्र के निर्माण भइल आ ओकर संस्कार कके संस्कृत बनल। फेर संस्कृत के विकासक्रम में आधुनिक हिंद-आर्य भषन के उद्भव ना होके क्रमशः प्राकृत, पालि, प्राकृत, अपभ्रंश आ अवहट्ट का बाद आउर नव हिंद-आर्य भषन के उद्भव भइल तर्कसंगत तथ्य सामने आइल बा। एके स्रोत भइला से संस्कृत से पईच-पालट चलल कौनो अचरज के बात नइखे।

रहल बात भोज शब्द के, त अब तक के सब से प्राचीन लिखित दस्तावेद के रूप में रहल वेद आ ओहू में आदि वेद के रूप में रहल ऋग्वेद में भोज शब्द के प्रयोग सुदासवंशी राजा, विश्वरक्षक, भोज्य सामग्री आदि के रूप में भइल बा जहाँ राजा भोज के निरंतरता आगे चलल आ विश्वामित्र के जजिमान के नाते भोज राजा के पुर भी वैदिक काल में बक्सर का काते-करवटे कहीं रहल सहजे अनुमान कइल जा सकेला। ई आलेख ओह तरफ भी खोज-अनुसंधान के जरूरत रहल संकेत करेला। एकरा बाद दसवाँ ईसवी शताब्दी में फिलहाल भारत के बिहार में रहल भोजपुर जिला के भोजपुर गाँव कभी परमारवंशी भोज राजा लोग के राजधानी रहे जहाँ से एह भाषा के नाम मिलके दुनिया में पसरल तथ्य सामने आइल बा। भाषा के अर्थ में भोजपुरी आ शब्द के प्रयोग काशी के राजा चेत सिंह के अडरेजन से भइल अगस्त १७८१ में हार के दू दिन बाद उनका सैनिक लोग द्वारा भइल, मुताखरिन के अडरेजी अनुवादक नोता मानुस के भूमिका में मिलेला, जे एह वारदात के खुदे गवाह रहलें। एहतरे पूर्व वैदिक आ वैदिक काल से लेके मध्यकाल में सन १७८१ तक नाम आ स्वरूप दूनू रूप में भोजपुरी भाषा के विकास भइल तथ्य उजागर होला।

संदर्भ सूची

ठाकुर, गोपाल; आ अशक, गोपाल. (२०२३). *भोजपुरी के आदिम धरोहर*. भोजपुरी प्रज्ञा-प्रतिष्ठान।

and a few men from the centre ran into a dark lane, and laid hold of a hen and some roots: the people screamed. "Do not make so much noise," said one of the men in his Bodjpooria Idiom (The Bodjpooria Idiom is that spoken by Chëyt-Sing's people—Translator): "we go to-day with the Frenghees, but we are all servants (tenants) to Chëyt-Sing, and may come back to-morrow with him; and then the question will be not about your roots, but about your wives and daughters." (Manus, 1786, Translator's Preface, p. 8)

खण्ड एक: ऐतिहासिक भाषाविज्ञान (भोजपुरी)

- तिवारी, उदय नारायण. (१९५४). *भोजपुरी भाषा और साहित्य*, प्रथम संस्करण. बिहार-राष्ट्रभाषा-परिषद्।
- तिवारी, उदय नारायण. (१९८४). *भोजपुरी भाषा और साहित्य*, द्वितीय परिवर्द्धित संस्करण. बिहार-राष्ट्रभाषा-परिषद्।
- त्रिपाठी, आचार्य रामदेव. (१९८७). *भोजपुरी व्याकरण*. भोजपुरी अकादमी।
- मोतीचन्द्र. (१९६२). *काशी का इतिहास: वैदिक काल से अर्वाचीन युग तक का राजनैतिक-सांस्कृतिक सर्वेक्षण*. हिन्दी ग्रन्थ-रत्नाकर प्राइवेट लिमिटेड।
- Barua, B. M. (1930). The Sohgaoura copper-plate inscription. *Annals of the Bhandarkar Oriental Research Institute Vol. 11, No. 1*, pp. 32-48.
- Beames, J. (1868). Notes on the Bhojpuri Dialect of Hindi spoken in Western Behar. *The Journal of the Royal Asiatic Society of Great Britain and Ireland, New Series Volume the Third*, 483-508.
- Bühler, G. (1896). The Sohgaoura copper plate. *The Indian Antiquary, A Journal of Oriental Research*, vol.xxv, pp. 261-266.
- Chatterji, S. K. (1940). Introduction. In S. K. Chatterji & B. Misra (eds.), *Vaṇa-ratnākara of Jyotirīśvara-Kaviśekharāchārya* (pp. ix-lxiv). The Royal Asiatic Society of Bengal.
- Chatterji, S. K. (1953). A study of the new Indo-Aryan speech treated in the 'Ukti-Vyakti-Prakarāṇa'. In A. J. V. Muni (Ed.). *Ukti-vyakti-prakarāṇa*. Singhi Jain Shastra Shikshapith Bharatiya Vidya Bhavan. 1-70.
- Chatterji, S. K., and Misra, B. (eds.). (1940). *Vaṇa-ratnākara of Jyotirīśvara-Kaviśekharāchārya*. The Royal Asiatic Society of Bengal.
- Grierson, G. A. (1883). *Seven grammars of the dialects and subdialects of the Bihārī language spoken in the province of Bihār, in the eastern protion of the North-Western provinces, and in the Northern portion of the Central provinces. Part I. Introductory*. The Bengal Secretariat Press.
- Grierson, G. A. (1903). *Linguistic Survey of India, Vol. V, Part-II*. Motilal Banarasidas.
- Hoernle, A. F. R. (1895). Note on the same. In the Honorary Secretaries (Eds.). *Proceedings of the Asiatic Society of Bengal*, January to December 1894, pp. 87-88. The Asiatic Society.
- Hoey, W. (1895). Note on the Sōhgaurā copper-plate. In the Honorary Secretaries (Eds.). *Proceedings of the Asiatic Society of Bengal*, January to December 1894, pp. 84-85. The Asiatic Society.
- Manus, N. (1785). Translator's preface. In Seid-Gholam-Hosseini-Khan (Author). *Sēir mutaqherin; or view of modern times, being an history of India, from the year 1118 to the year 1194 (this year answers to the Christian year 1781-82) of the Hedjrah; containing, in general, the reigns of the seven last emperors of Hindostan, and in particular, an account of the English wars in Bengal, with a circumstantial detail of the rise and fall of the families of Seradj-Ed-Dowlah, and Shudjah-Ed-Dowlah, the last sovereigns of Bengal and Aud; to which the author has added a critical examination of the English Government and policy in those countries, down to the year 1783* (N. Manus, Trans. from Persian), pp. 1-21. T. D. Chatterjee.
- Muni, A. J. V. (Ed.). (1940). *Ukti-vyakti-prakarāṇa*. Singhi Jain Shastra Shikshapith Bharatiya Vidya Bhavan.
- Smith, V. A. (1895). Note on the same. In the Honorary Secretaries (Eds.). *Proceedings of the Asiatic Society of Bengal*, January to December 1894, pp. 85-87. The Asiatic Society.
- Tiwari, U. N. (1960). *The origin & development of Bhojpuri*. The Asiatic Society.